निश्चयवाद (Determinism)

वातावरणीय शक्तियाँ मानव पर अपना प्रभाव डालती है तथा मानव इस वातावरण में संशोधन कर एक सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता है, मानव वातावरण के साथ सामंजस्य भी करता है, परंतु जब प्राकृतिक वातावरण को प्रबल माना जाता है, तो उसे निश्चयवाद या वातावरणवाद या नियतिवाद या प्रकृतिवाद (Determinism) कहा जाता है। इस विचारधारा के समर्थकों का मानना है कि प्राकृतिक वातावरण की शक्तियाँ मानवीय क्रिया-कलापों को नियंत्रित करती है। प्राचीनकाल से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक के भूगोलवेत्ताओं ने पर्यावरण को ही सर्व प्रधान माना है। भूगोल के शुरुआती भूगोलवेदों ने भी मानव के स्वभाव, निवास एवं प्रदेशों के स्वरूप पर प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव को स्पष्ट रूप से हावी होते हुए माना।

प्रसिद्ध यूनानी भूगोलवेत्ता हिप्पोक्रेट्स ने ईसा पूर्व 420 में यूनानियों पर जलवायु, स्थलाकृति एवं मिट्टियों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से समझाया।

रोमन भूगोलवेत्ता स्ट्रेबो ने अपने विश्वकोषीय ग्रंथ भूगोल में मानवीय स्वभाव उसके व्यवहार आचार-विचार, धर्म तथा बस्ती विकास पर प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव को समझाया है। उन्होंने रोम की संपन्नता का कारण इटली के आकार, धरातल, जलवायु और क्षेत्रीय संबंधों को माना है, जिसने रोम साम्राज्य के उद्भव, विकास व शक्ति को प्रभावित किया।

इमैनुएल कांट महोदय (जर्मनी) ने मानव पर स्थलाकृति का प्रभाव स्पष्ट करते हुए लिखा कि "पहाड़ी प्रदेश के मानव अध्यवसायी हैंसमुख, थोड़ा स्वतंत्रता प्रिय और अपने देश से प्रेम करने वाले होते हैं।

जर्मन भूगोलवेत्ता कार्ल रिटर ने भी अपनी प्रसिद्ध ग्रंथ अर्डकुंडे (Erdkunde) में निश्चयवाद की विचारधारा का समर्थन करते हुए प्राकृतिक वातावरण एवं वहाँ के निवासियों के पारस्परिक संबंधों की अधिक व्याख्या की है।
अमेरिकन भूगोलवेत्ता कुमारी एलेन चर्चिल सेम्पुल ने अपनी पुस्तक "Influences of Geographical Environment" में वातावरण के प्रभाव को मानव के क्रिया कलाप, खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचारों पर स्पष्टतः बताया। इनका विचार था "मानव भूतल की उपज है, इसका आशय केवल इतना ही नहीं कि वह पृथ्वी का मात्र बच्चा है उसकी धूल का कण है, बल्कि यह भी है कि पृथ्वी माँ ने उसे जन्म दिया है, उसका लालन-पालन किया है उसे करने के लिए कार्य दिए हैं, उसके विचारों को निर्देशित किया है उसके समक्ष कठिनाइयाँ प्रस्तुत की है जिससे उसका शरीर बलवान हुआ है तथा बुद्धि कुशाग्र हुई है। उसे नौकारोहण एवं सिंचाई की समस्याएँ दी हैं और साथ ही साथ उसके कान में समस्याओं का हल भी बता दिया है, वह उसकी हड्डी और मांस में तथा उसके मस्तिष्क और आत्मा में प्रवेश कर गई है"।
आलोचना— बीसवीं शताब्दी में मानव ने चहुँमुखी वैज्ञानिक प्रगति की जिससे कई ऐसी परिस्थितियाँ सामने आयी जिनसे वातावरण की प्रभुता स्वीकारने में संकोच लगता है। अब मानव प्राकृतिक शक्तियों के साथ-साथ मानवीय संस्कृति को भी महत्वपूर्ण मानने लगा है।